उप-विषय

1. भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा
2. भारतीय ज्ञान परंपरा: सत्ता और वर्चस्व
3. भारतीय ज्ञान परंपरा और भारत-बोध
4. भारतीय ज्ञान परंपरा और विश्व-बोध
5. भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत साहित्य
6. भारतीय ज्ञान परंपरा और श्रमण संस्कृति
7. भारतीय ज्ञान परंपरा और आजीवक संस्कृति
8. भारतीय ज्ञान परंपरा और लोकायत
9. भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन और बौद्ध
10. भारतीय ज्ञान परंपरा और योग
11. भारतीय ज्ञान परंपरा और आयुर्वेद
12. भारतीय ज्ञान परंपरा और निर्गुणिया संत
13. भारतीय ज्ञान परंपरा और संत स्त्रियों का योगदान
14. सहमति असहमति का विवेक और भक्ति आंदोलन
15. भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक-संस्कृति
16. भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक चिंतन

यात्रा व्यय तथा ठहरने की व्यवस्था :

विशिष्ट विद्वान और प्रतिभागी जो दूसरे शहर से आएंगे उनके लिए ठहरने की व्यवस्था संस्थान के अतिथि गृह तथा पीजी हॉस्टल में की जायेगी। राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने वाले प्रतिभागियों (जिनके आलेख स्वीकृत हैं) टिकट प्रस्तुत करने पर उन्हें परिषद के नियमानुसार 3 टायर एसी, यात्रा भत्ता आदि आरटीजीएस के द्वारा दिया जाएगा। विस्तृत जानकारी तथा पेपर स्वीकृति के बारे में हमारी वेबसाईट-www.ncert.nic.in देख सकते हैं।

सारांश और पूर्ण आलेख संदर्भ सहित हिन्दी फॉन्ट यूनिकोड में टंकण कराकर पीडीएफ़ और वर्ड फाइल दोनों में ई-मेल- bgpseminarncert@gmail.com पर शीघ्र भेजने की कृपा करें। शोध आलेख केवल हिन्दी में ही स्वीकार किए जाएंगे। प्रस्तुत किए गए आलेख शीघ्र ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए जाएंगे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के संरक्षक हैं

निदेशक
प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
एनसीईआरटी, नई दिल्ली

संयुक्त निदेशक
प्रो. श्रीधर श्रीवास्तव (NCERT)
प्रो. अमरेन्द्र बेहरा (CIET)

सचिव
श्री अमन शर्मा
एनसीईआरटी,नई दिल्ली

विभागाध्यक्ष
प्रो. मो. फ़ारुक़ अंसारी
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
भाषा शिक्षा विभाग
एनसीईआरटी, नई दिल्ली

संयोजक
प्रो. लालचंद राम
भाषा शिक्षा विभाग
एनसीईआरटी,
नई दिल्ली

9990070895, 8770391405
ई-मेल: lalncert@gmail.com

विशिष्ट संकाय

प्रो. संध्या सिंह, प्रो. सरयुग यादव, प्रो. निधि तिवारी, प्रो. संजय कुमार सुमन, प्रो. दीवान हन्नान खान, प्रो. कीर्ति कपूर, प्रो. जतीन्द्र मोहन मिश्र, प्रो. आर. मेघनाथन, प्रो. चमन आरा खान, डॉ. नरेश कोहली, डॉ. नीलकंठ कुमार, डॉ. देवकी नंदन, डॉ. वंदना शर्मा, डॉ. वाचस्पतिनाथ झा "मणि", डॉ. अश्वनी संदीप पाटील, डॉ. गिरीश कुमार तिवारी

महत्वपूर्ण तिथियाँ

सारांश और आलेख भेजने की तिथि : 30 सितंबर, 2024
पूर्ण आलेख भेजने की अंतिम तिथि : 31 अक्टूबर, 2024
पत्र स्वीकृति की सूचना : 10 नवंबर, 2024
सेमीनार प्रस्तुतीकरण: 28-29 नवंबर, 2024

पंजीकरण लिंक पर क्लिक या QR कोड स्कैन करें:
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdvA9A8Vix4zgPWoXuNi1ghOHXxwdQ9aS8qEBG0TrPy1jdBUg/viewform?vc=0&c=0&w=1&flr=0

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय ज्ञान परंपरा का सातत्य

28-29 नवंबर, 2024

स्थान

सम्मेलन कक्ष- 202
CIET, NCERT

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

आयोजक
भाषा शिक्षा विभाग
Department of Education in Languages
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली- 110016
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg, New Delhi- 110016

भारतीय ज्ञान परंपरा का सातत्य

भारत की ज्ञान परंपरा अपने समाज और संस्कृति से निःसृत है। भारत की परंपरा समावेशी, करुणामूलक, समतामूलक रही है, इसीलिए भारतीय संस्कृति सदैव सामासिक रही है। यह सामासिकता ही राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान करता है और पूरे देश को राष्ट्रीय एकता और अखंडता के सूत्र में बांधता है। धूमिल के शब्दों में –

"भूखा रहकर भी आदमी
अपने हिस्से का आकाश
मुस्कुराते हुए ढोता है।
अपने देश की मिट्टी को आँख की
पुतली समझता है।"

भारतीय ज्ञान परंपरा बहुत समृद्ध रही है इसका अतीत स्वर्णिम रहा है। भारत का अतीत इतना गौरवशाली रहा है कि वह दुनिया की जिज्ञासा का केन्द्र रहा है। यही कारण है कि इस देश में पूरी दुनिया से लोग आए, रच बस गए और यह क्रम आज भी गतिमान है। यहाँ प्रवास के क्रम में उन लोगों ने बहुत कुछ सीखा और अपने देश जाकर उसे अपनी भाषा में अनुवाद कर अपने देश की ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया जबकि उस ज्ञान का मूल उद्गम भारत ही रहा है। हिंदी के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद ने कहा है-

"अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा"

पूरी दुनिया से लोग यहाँ आए, यहीं रह गए, उन्हें यह मधुमय देश सहारा देता रहा। शक, हूण, पठान, तुर्क, मुगल, अंग्रेज सभी आए। कुछ ने लूटा-पीटा, कुछ ने यहाँ की ज्ञान परंपरा को नष्ट किया। नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय जो न सिर्फ हमारे लिए अपितु दुनिया के लिए ज्ञान प्राप्ति का केंद्र थे, को जलाकर नष्ट कर दिया गया। अगर ये दोनों ग्रंथागार (ज्ञान के भंडार) उपलब्ध होते तो हमारा राष्ट्र आज प्रगति के शीर्ष पर होता और हम विश्वगुरू के रूप में प्रतिष्ठित होते।

भारतीय ज्ञान परंपरा में ऐसे संत कवि और चिंतक हुए जिन्होंने मनुष्य की जिजीविषा को बचाए रखने के लिए मृत्यु के डर को निकाला- अमरपुर, बेगमपुरा और रामराज्य की अवधारणा दी और तत्कालीन शासन व्यवस्था के सामने यह प्रस्ताव रखा कि 'ऐसा चाहूँ राज मैं जहाँ मिलै सबन को अन्न। छोट बड़ो सब सम बसे रविदास रहे प्रसन्न॥' तुलसीदास ने कहा था 'हम चाकर रघुवीर के, पटौ लिखौ दरबार। तुलसी अब का होहिहैं, नर के मनसबदार॥' या फिर शासन व्यवस्था को धता बताते हुए कहा था- 'माँगि के खइबो, मसीत पे सोइबो, लेवो को एक न देवै को दोऊ॥' यह पूरी की पूरी परंपरा बुद्ध के 'अप्प दीपो भव' अर्थात् 'आप अपना प्रकाश स्वयं बनें' से मेल खाती है। यही कारण है कि भारत की ज्ञान परंपरा कभी सुप्त नहीं रही। इसके केंद्र में प्रकृति, पर्यावरण और मनुष्य सदैव रहे हैं।

भारत देश की मिट्टी बहुत उर्वर है, यहाँ के लोगों का मन-मस्तिष्क बहुत गतिशील, सृजनशील और नवाचारी है। वह सृजन कर लेंगे, दूसरी भाषाओं में प्राप्त ज्ञान का अनुवाद कर लेंगे। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश के साहित्य से अर्जित कर लेंगे। भारतीय ज्ञान का 50% यहाँ की मौखिक परंपरा में व्याप्त है। उसे भी राष्ट्रहित में संकलित और अर्जित कर राष्ट्र के विकास कार्य में उपयोग किया जा सकता है। दुनिया की प्राचीन सभ्यताएँ और संस्कृतियाँ नष्ट हो गई, किंतु भारत की बौद्धिक ज्ञान परंपरा उसकी संस्कृति और सभ्यता में अभी भी जीवंत है और निरंतर प्रवहमान है।
मोहम्मद इकबाल ने ठीक ही कहा था–

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
यूनान, मिश्र, रोमाँ सब मिट गए जहाँ से
बाकी बचा है अब तक नामो निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।"

सारी दुनिया हमें अपना दुश्मन मानती रही फिर भी हम **'वसुधैव कुटुम्बकम'** के सिद्धांत पर चलते रहे। यह समस्त विश्व के लिए भारत की देन है। हम पूरी वसुधा को अपना परिवार मानते हैं। आज भी एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य का संकल्प उसी सातत्यता, विश्वसनीयता एवं वैधता का परिचायक है।
धर्म, दर्शन, अध्यात्म, आयुर्वेद, योग आदि सब कुछ तो भारत ने दुनिया को दिया। चरक और सुश्रुत से लेकर वेद, पुराण स्मृतियाँ, महाभारत, रामायण, बौद्ध और जैन के योगदान तथा मध्यकाल की पूरी ज्ञान परंपरा 'संतो भाई आई ज्ञान की आँधी रे!' (निर्गुण-सगुण), भक्ति आंदोलन, आधुनिक युग का स्वाधीनता आंदोलन, भारतीय नवजागरण और सभी में कोई न कोई पारस्परिक संबंध स्पष्ट दिखाई देता है। कोई न कोई निरंतरता अवश्य दिखाई पड़ती है। हिंदी के महाकवि जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में कहा है-

"औरों को हँसते देखो मनु
हँसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।"

"सर्वे भवन्तु सुखिन:। सर्वे संतु निरामया:। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥" की अवधारणा भारत की ही देन है। हम सिर्फ सुखी रहें ऐसी बात नहीं, हमारे आस-पास-पड़ोस सभी सुखी रहने चाहिए इसीलिए मानव कल्याण के लिए सदैव सहयोग देने वाला राष्ट्र भारत ही है। कोविड-19 के दौरान भारत की विश्वव्यापी भूमिका को दुनिया ने देखा और सराहा। यह विशेषता ही हमारी मूल संवेदना है। जयशंकर प्रसाद ने कहा –

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा पूरी क्यों हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडम्बना है जीवन की"

इच्छा और ज्ञान को क्रिया रूप देना (Desire, Knowledge & Action) यह ऐसा मूल मंत्र है जो दुनिया से अलग भारत की मेधा की पहचान कराता है। भारत की मेधा (Talent) पूरी दुनिया को चलाने के लिए पर्याप्त और सक्षम है।
प्रसाद के हवाले से ही –

" शक्ति के विद्युतकण जो व्यस्त
निकल बिखरे हैं हो निरुपाय
समन्वय उसका करें समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय। "

विश्व कल्याण का मंत्र, शांति, करुणा, दया, भ्रातृत्व सहयोग यह ऐसा आधारभूत मानवीय मूल्य है जो पूरी दुनिया को एक साथ जोड़ने में काम आता है। भारत की ज्ञान परंपरा और उसका क्रियान्वयन कोविड के दौरान देखा जा चुका है। पूरी दुनिया के कल्याण के लिए भारत आगे आया, यह जगजाहिर है। हम अपनी ज्ञान परंपरा को जानें, पहचानें, उसका राष्ट्र निर्माण एवं विकास, मानव कल्याण हेतु प्रयोग करें। भावी पीढ़ी, युवा पीढ़ी इस संकल्प को जाने-पहचाने, इस पर गर्व करे, यही इस संगोष्ठी अर्थात् परियोजना का उद्देश्य है। भारतीय ज्ञान परंपरा की सातत्यता को जानना, पहचानना, आत्मसात करना एवं राष्ट्र की प्रगति में उसका प्रभावकारी ढंग से उपयोग करना, राष्ट्र निर्माण और विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देना आवश्यक है। जिससे हम पुन: विश्व गुरू बन सकते हैं।

विशिष्ट उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान परंपरा को जानना और समझना,
2. भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्ध विरासत खोजना और प्रामाणिक सामग्री को एकत्रित करना,
3. राष्ट्रीय संगोष्ठी में भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रमुखता से रेखांकित करना,
4. संगोष्ठी के उपरांत चयनित शोध पत्रों को प्रकाशित करना।